17 मार्च 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 24 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

'निमित्त-उपादान अदालत में' नाटक संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में महामस्तकाभिषेक एवं तृतीय वार्षिक महोत्सव के अवसर पर महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा दिनांक 20 फरवरी को **'निर्विवाद तथ्य बना विवाद का विषय - निमित्त-उपादान अदालत में'** नामक एक नाटक का मंचन किया गया।

कार्यक्रम के उद्घाटनकर्त्ता श्री अजयजी जैन मेरठ, श्री सौरभजी जैन मेरठ एवं श्री रोहितजी जैन मेरठ थे। नाटक के पात्र निम्नानुसार हैं -

निमित्त पक्षकार - श्रीसांत उखलकर (शास्त्री तृतीय वर्ष)
उपादान पक्षकार - निवेश खरगापुर (शास्त्री द्वितीय वर्ष)
निमित्त वकील - अनुभव सिलवानी (शास्त्री तृतीय वर्ष)
उपादान वकील - मयंक ठगन टीकमगढ (शास्त्री तृतीय वर्ष)
सहायक वकील - अक्षय उभेगांव, देवेन्द्र उम्बरा, सौरभ डूंगासरा, जितेन्द्र सादपुर
प्रवचनकार - शुभम मोदी खनियांधाना (शास्त्री तृतीय वर्ष)
न्यायाधीश - प्रशान्त अमरमऊ (शास्त्री तृतीय वर्ष)
दरबान - (1) अरविन्द ललितपुर (शास्त्री द्वितीय वर्ष), (2) अमित धर्मन्नावर (शास्त्री द्वितीय वर्ष)
बाबू - स्वप्निल वायकोस, औरंगाबाद
गवाह - हेमचन्द शाहगढ (कुम्हार), बाहुबली दमोह, अच्युतकांत जसवंतनगर, नरेश भगवां, सौरभ कोलारस, पवन मुम्बई, प्रखर छिन्दवाड़ा, संदेश मजगुंआ (शास्त्री तृतीय वर्ष)।

नाटक का निर्देशन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ वैशाली नगर स्थित ऋषभायतन-अध्यात्मधाम के नवनिर्मित जिनमंदिर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा विधान के विशिष्ट छंदों का अर्थ किया गया और पुरानी मंडी के सीमंधर जिनालय में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन व दोपहर में कक्षा का लाभ मिला।

विधि-विधान का समस्त कार्य पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर द्वारा संपन्न हुआ।

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में अन्तिम वर्ष के छात्रों का -

विदाई समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 1 मार्च को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रातः पंचतीर्थ जिनालय पर जिनेन्द्र पूजन और रात्रि में भव्य जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर शास्त्री द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित दो सत्रों के विदाई समारोह में प्रथम सत्र के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल तथा मुख्य अतिथि तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं द्वितीय सत्र के अध्यक्ष पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गोम्मटेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, कु. प्रतीति पाटील इत्यादि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया तथा महाविद्यालय में अपना स्वर्ण युग व्यतीत हुआ बताते हुये स्वयं को सौभाग्यशाली बताया। साथ ही सभी विद्यार्थियों ने जीवनपर्यंत स्वाध्याय एवं तत्त्वप्रचार का संकल्प भी लिया।

महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिनवाणी को पढकर, पढाकर अपने जीवन में उतारना ही वास्तविक लाभ है। यही मुक्ति प्राप्ति का कारण है।

श्री परमात्मप्रकाशजी ने कहा कि अपना विजन आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है क्योंकि आज तक आप एक अतिसंरक्षित माहौल में रह रहे हैं और अब कल से आपको खुले आकाश की चुनौतियों से रूबरू होना है।

पण्डित शांतिकुमारजी ने कहा कि तीन सकार स्वाध्याय, सामन्जस्य व संतोष जीवन में होना इस विद्या का विशेष लाभ है।

अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को फोटो, श्रीफल और डॉ. भारिल्ल व पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंटकर सम्मानित किया गया। सभी मंचासीन महानुभावों ने शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देते हुये उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनायें दीं।

सम्पादकीय –

संस्कार

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

''बात भी सच थी। स्थानान्तर कराने के सिवाय वे बेचारे उन अकर्मण्य अध्यापकों का कर भी क्या सकते थे ? जिसके भय से कुछ सुधार की संभावना हो। और स्थानान्तरण से भी क्या होने वाला है ? साँपनाथ जायेंगे तो नागनाथ आयेंगे। उन्हें क्या फर्क पड़ने वाला था ? अत: वे हताश होकर बैठ गये थे और शान्ति से अपना समय व्यतीत कर रहे थे। उनकी सेवानिवृत्ति के भी केवल दो वर्ष ही शेष बचे थे, अत: उन्होंने शेष समय को शान्ति से निकालने का मानस बना लिया था तथा उन्होंने अपने बेटे प्रो. ज्ञान को भी यही सलाह दी थी कि –''यद्यपि इन परिस्थितियों में अब शिक्षा जैसा पवित्र कार्य करना अपने बूते की बात नहीं रही; पर परिस्थितियों से घबड़ा कर पलायन करना, पीछे हटना भी तो कायरता होगी। अत: मेरी सलाह मानो तो कोई ऐसा उपाय सोचो, जिससे शिक्षक अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्ण जागरूक रहने लगे और शिक्षण का पूरा कायाकल्प हो जाय।''

ज्ञान के कानों में उसके पिता श्री अरहंतदास के ये शब्द गूंज ही रहे थे कि इसी बीच सेठ लक्ष्मीकांत द्वारा प्रस्तावित योजना से श्री अरहंतदास की कल्पनाओं को साकार रूप मिल गया था।

बस, फिर क्या था अरहंतदासजी ने अपने सपनों के अनुरूप एक आदर्श शिक्षा संस्थान की स्थापना कर डाली तथा ज्ञान को भी इसी क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

यद्यपि ज्ञान की इच्छा इस क्षेत्र में कार्य करने की नहीं थी, क्योंकि वह उस विद्यालय की हालत देख चुका था, जिसमें वह स्वयं पढा था; परन्तु वह एक तो पिता का आज्ञाकारी पुत्र था, दूसरे स्वयं भी इस क्षेत्र में कुछ आदर्श प्रस्तुत करने की भावना रखता था एवं पिता की भावनाओं को भी साकार करना चाहता था।

इसकारण शिक्षा समाप्त होते ही वह नव स्थापित आदर्श शिक्षा संस्थान के महाविद्यालय में दर्शन विभाग का प्राध्यापक बन गया।

प्रो. ज्ञान ने उसी शासकीय शिक्षालय में शिक्षण प्राप्त किया था, जो शिक्षालय के नाम पर कलंक था, जिसकी दशा दयनीय थी। जिसमें प्रधानाध्यापक के पद पर काम करते हुए अधिकारियों और सहयोगी अध्यापकों को अकर्मण्यता के कारण श्री अरहंतदास चाहते हुए भी शिक्षण में कुछ भी सुधार नहीं कर पाए थे। फिर भी ज्ञान ने अपनी प्रतिभा व परिश्रम के बल पर आदि से अन्त तक सभी कक्षाओं में प्रथम श्रेणी प्राप्त की थी। (क्रमश:)

मंगल सूचना

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के हस्तलिखित ग्रंथ मोक्षमार्गप्रकाशक की प्रतिकृति अब ताम्रपत्र पर लाने का कार्य प्रगति पर है। आशा है यह कार्य इस वर्ष के अन्त तक पूर्ण हो जायेगा। यह कार्य पण्डित मनोजकुमारजी जैन (चीनी वाले) मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) के कुशल निर्देशन व देखरेख में हो रहा है। ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व पाँचों परमागम व तत्त्वार्थसूत्र का कार्य पूर्ण होकर ग्रंथ विराजमान हो चुके हैं।

हार्दिक बधाई

कुरावड-उदयपुर (राज.) निवासी ललितकुमार महावीरलाल भगनोवत की पौत्री **सौ. प्रियंका जैन** का शुभविवाह **चि. नितिन जांगड़ा** सुपुत्र बृजलाल जैन मुम्बई के साथ दिनांक 8 फरवरी को संपन्न हुआ। एतदर्थ जैनपथप्रदर्शक हेतु 2000/- रुपये प्राप्त हुये।

शोक समाचार

आगरा (उ.प्र.) निवासी श्री शिखरचंदजी मोठ्या (जैन पायल) का दिनांक 4 फरवरी 2015 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभावी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण

फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम	:	जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
मुद्रक	:	श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)
प्रकाशक का नाम	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 17-3-2015

प्रकाशक :
ब्र. यशपाल जैन
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए - *(आठवीं किश्त, गतांक से आगे)*

- परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा - ***हमने कभी यह सोचा ही नहीं कि किस प्रकार ''सुख क्या है'' इस प्रश्न का जवाब इसके साथ जुड़ा हुआ है कि ''मैं कौन हूँ'', ''मैं'' की परिभाषा बदलते ही हमारे सुख-दु:ख की और हमारे हित-अहित की परिभाषाएं भी बदल जाती हैं। किस तरह ?***पढिये-

यहाँ प्रश्न उठता है कि हमारे हित तो हित ही रहेंगे और अहित, अहित। हमारे सुख, सुख रहेंगे और दु:ख, दु:ख। आखिर **''मैं'' की परिभाषा बदलने से ''हित-अहित'' या ''सुख-दु:ख'' कैसे बदल जायेंगे ?**

प्रथम दृष्ट्या तो यह बात सही भी लगती है पर यदि हम तनिक गहराई से विचार करें तो बात एकदम स्पष्ट हो जायेगी।

आइये विचार करें -

यह हमारी अपरिपक्वता और हमारे विचारों का आधा-अधूरापन ही है कि अभी तक हमारी ''मैं'' की परिभाषा ही सुनिश्चित नहीं है एवं समय, स्थान और परिस्थिति के अनुरूप बदलती रहती है। कभी हम अपने को कुछ मानते हैं, कभी कुछ बतलाते हैं, कभी कुछ और कभी कुछ।

क्या आप जानते हैं जो हर बार अपने आपको कुछ और, कुछ अलग बतलाते हैं, उन्हें हम क्या कहते हैं ?

पागल !

और वे जिनके अनेकों नाम होते हैं ?

''अ, उर्फ ब, उर्फ स, उर्फ-----''

ऐसे लोग सामान्यतया ठग या अपराधी होते हैं।

विचार हमें ही करना है कि हम कौनसी श्रेणी में आते हैं।

यदि हम अपने अनेकों नामों और पहिचानों की चर्चा करें तो समय-समय पर निम्न नाम दृष्टि में आते हैं -

''मैं मानव हूँ, मैं हिन्दुस्तानी हूँ, मैं राजस्थानी, मैं जैन, मैं हिन्दी भाषी, मैं व्यापारी, मैं अमीर, मैं युवक, मैं स्वस्थ, मैं पिता, मैं बुद्धिमान, मैं विद्वान, मैं दानवीर और ऐसे ही अनेक नाम हैं मेरे।

बस ! अब मेरी आवश्यकता नहीं है, आप ही अपने आपको उपरोक्त अनेकों प्रकार के ''मैं'' में से प्रत्येक में एक-एक करके स्थापित कीजिये, आत्मसात कीजिये, उसी ''मैं'' में लीन हो जाइये, उसी ''मैं'' मय हो जाइये और फिर बतलाइये कि क्या हर बार आप एक जैसा महसूस करते हैं ?

क्या हर बार आपके हित-अहित और सुख-दु:ख वही बने रहते हैं, आमूलचूल बदल नहीं जाते हैं ?

आप पायेंगे कि अधिकतर तो ये एक दूसरे के एकदम विपरीत होते हैं।

कोई उदाहरण आता है आपके ख्याल में ?

नहीं ? मैं बतलाता हूँ -

आप एक बार अपने आपको बहू मानकर अपने हितों की कल्पना कीजिये, उस ''बहूपने'' को भरपूर जी लेने के बाद अब अपने आपको ''सासपने'' में स्थापित कीजिये और देखिये कमाल।

क्या हुआ ? बदल गया न सब कुछ ?

सब कुछ बदल जाता है, बहू और सास के अधिकारों और कर्तव्यों की पूरी लिस्ट ही बदल जाती है, हालांकि हम तो वही एक है, तब भी जब हमने अपने आपको बहू माना और तब भी जब हमने अपने को सास माना, तब यह परिवर्तन क्यों ?

एक बालक के लिये उसका खेलकूद ही सबकुछ है, वह एक पल भी व्यर्थ खोये बिना प्रतिपल मात्र खेलकूद में व्यस्त, मस्त रहता है; क्योंकि उसके लिये तो अपना अभी का आनन्द और मनोरंजन ही सबकुछ है, उसे कल का चिन्तन ही कहाँ है, पर जैसे ही उसे यह अहसास दिलाया जाता है कि ''भाई ! यह बचपना ही सबकुछ नहीं है, तू सदाकाल मात्र बालक ही नहीं रहने वाला है, तेरे सामने सारी जिन्दगी पड़ी है, यदि तू अपना समय खेलकूद में ही बर्बाद करता रहेगा और पढाई-लिखाई नहीं करेगा तो अनाडी ही रह जायेगा और जीवनभर मजदूरी करके कष्ट उठाएगा। यदि जीवन में कुछ बनना है तो पढाई-लिखाई में ध्यान दे !''

जैसे ही उस बालक को यह अहसास हो जाता है कि मैं बालक नहीं वरन 60-80 या 100 साल तक जिन्दा रहने वाला मनुष्य हूँ तो अब उसकी गतिविधियाँ, दिनचर्या और जीवन बदल जाता है। अब वह मौजमस्ती और खेलकूद छोड़कर नीरस पढाई में जुट जाता है, ताकि उसका (60-80 या 100 वर्ष का) यह (भावी) जीवन खुशहाल हो सके।

इसप्रकार हम देखते हैं कि ***किस तरह ''मैं'' की परिभाषा बदलते ही सबकुछ बदल जाता है।***

कल तक वह अपने आपको बालक मानता था तो अपने ''आज'' की मस्ती में रहता था, अब जब वह अपने को ''मनुष्य'' मानने लगा तो मनुष्य जीवन में ऐश्वर्य और सुख पाने के लिये पढने-लिखने में जुट गया, सम्पूर्ण मनुष्य जीवन के हित के लिये मात्र आज के हितों को तिलांजलि दे दी।

क्यों ?

क्योंकि अब उसका विचार है कि ***''यह बचपना तो जाने वाला है, पर मैं तो तब भी रहूंगा, इसलिये मैं बालक नहीं हो सकता, मैं तो मनुष्य हूँ, यह बचपना चला जायेगा, यौवन आयेगा चला जायेगा, प्रौढावस्था आयेगी और चली जायेगी, पर मैं तो तब भी रहूँगा। इसलिये मैं बाल, युवक या प्रौढ नहीं, मैं तो मनुष्य हूँ जो सदा रहूँगा।''***यह जानकर व मानकर **अब यह अपने आज में अधिक नहीं रमता है, बल्कि अत्यंत संक्षेप में अपनी आज की अपरिहार्य जरूरतों की पूर्ति करके फिर अपने सम्पूर्ण मनुष्य जीवन के विकास और सुखसुविधा के कार्यों में जुट जाता है।**

अब एक प्रश्न फिर उठता है कि क्या मैं बस मनुष्य हूँ या कुछ और ? क्या मैं सदाकाल मनुष्य ही रहूँगा ? ***आज से 100 वर्ष बाद जब मैं मनुष्य नहीं रहूँगा तब क्या मैं ही नहीं रहूँगा ?***

आज से 10-20 वर्ष पहिले भी जब मैं मनुष्य नहीं था, तब भी क्या ''मैं'' नहीं था ? यदि था तो क्या था ? आखिर मैं हूँ कौन ?

यदि मैं अपने आपको मनुष्य मानकर सम्पूर्ण मानव जीवन के हित के लिये अपने आज की सुखसुविधा और मौजमस्ती को तिलांजलि दे सकता हूँ तो क्या अपने आगामी अनंतकाल के हित के लिये इस मानवजीवन की आज की मौजमस्ती नहीं छोड़ सकता ?

पर इसके लिये संशय रहित होकर दृढतापूर्वक यह तय करना होगा कि ''आखिर मैं हूँ कौन''जानने के लिये पढिये आगामी अंक...**(क्रमश:)**

17 मार्च 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

सिद्धान्तरत्न सिद्धान्तमहोदधि पण्डित नन्हेलालजी जैन न्याय-सिद्धान्तशास्त्री राजाखेड़ा (राज.) लिखते हैं –

''श्री कानजीस्वामी ने पूज्य कुन्दकुन्द आचार्य के समयसार, प्रवचनसार आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों का मर्म जनता को पिलाकर जो कल्याण किया है वह भुलाया नहीं जा सकता। उक्त ग्रंथों के गूढतत्त्वों का प्रचार और प्रसार स्वामीजी की ही देन है। पचास वर्ष पहिले इन महान ग्रन्थों के नाम से लोग ठीक-ठीक परिचित भी नहीं थे।

स्वामीजी अपनी स्पष्टवादिता के लिये प्रसिद्ध थे। वस्तुस्वरूप जैसा और जो है उसके कहने में सदा निर्भीक रहे। आपने कभी लोगों के द्वारा किये गये आक्षेपों का उत्तर देने की तरफ ध्यान नहीं दिया, स्वामीजी दूरदर्शी थे।

स्वामीजी के सम्पर्क में जो भी विद्वान आया वह पारस पत्थर से स्वर्ण के समान महाविद्वान बन गया। यही कारण है कि श्री बाबूभाई, डॉ. भारिल्ल आदि स्वामीजी के चरण-चिह्नों पर चलकर वैसे ही बन गये।

स्वामीजी अध्यात्म-ग्रन्थों के प्रकाण्ड विद्वान थे। प्रमाण, निश्चयनय आदि द्वारा वस्तु का विवेचन कितना गूढ और अकाट्य होता था। जिसे हृदयंगम कर विद्वान भी गद्गद् हो जाते थे। आज वही महान विभूति इस नश्वर संसार से सदा के लिये लुप्त हो गयी है।''

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

शिलान्यास, ज्ञानगोष्ठी एवं विधान संपन्न

द्रोणगिरि-छतरपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्रोणगिरि के तत्त्वावधान में स्वाध्याय भवन का शिलान्यास, ज्ञानगोष्ठी एवं चौंसठ ऋद्धि विधान का आयोजन दिनांक 7 से 11 मार्च तक किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र.रवीन्द्रजी आत्मन, ब्र.सुमतप्रकाशजी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, पण्डित रमेशजी दाऊ, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, ब्र. नन्हे भैया सागर, पण्डित सुरेशजी टीकमगढ आदि विद्वानों का समागम मिला।

कार्यक्रम में मुख्य शिलान्यासकर्त्ता श्री विमलकुमारजी जैन नीरु केमिकल दिल्ली थे। अन्य शिलान्यासकर्ता डॉ. वासंतीबेन शाह मुम्बई एवं श्री विजयभाई दादर थे। इस प्रसंग पर देशभर से 700-800 साधर्मियों ने लाभ लिया। विधान के समस्त कार्य ब्र. महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर ने संपन्न कराये।

क्रमबद्धपर्याय पर सेमिनार संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 8 मार्च को श्री शिखर जैन शास्त्री की स्मृति में गठित 'शिखर श्रुत-संवर्धन समिति' जयपुर के तत्त्वावधान में द्वितीय वार्षिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत जैनदर्शन के अद्भुत सिद्धांत **क्रमबद्धपर्याय** विषय पर सेमिनार का आयोजन हुआ।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भगवान महावीर विकलांग समिति के चैयरमेन श्री डी.आर. मेहता उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के क्रमबद्धपर्याय पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला।

समारोह की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (पूर्व अध्यक्ष-राजस्थान जैनसभा) ने की।

कु.प्रतीति पाटील द्वारा किये गये मंगलाचरण के उपरांत सभी अतिथियों का परिचय डॉ. सनतकुमारजी जैन ने दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. भागचन्दजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित संजयजी सेठी ने किया। **– संजय शास्त्री बड़ामलहरा, संयोजक**

प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127